काँटे कम-से-कम मत बोओ

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

कवि परिचय :

कवि रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' का जन्म सन् 1915 में उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जिले उत्तरप्रदेश के किशनपुर गाँव में हुआ । उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करके सरकारी नौकरी की । बाद में वे हिन्दी के प्रोफेसर हो गये ।

'अंचल' जी के पास अनुभव था और कल्पना-शक्ति भी थी । इसलिए शुरू में उन्होंने सूक्ष्म मनोभावों पर लिखा । उनकी कविता में मानव और प्रकृति के सौन्दर्य, यौवन, स्नेह-प्रेम, दु:ख-दर्द के सुन्दर और भावात्मक चित्र मिलते हैं । लेकिन कुछ दिनों के बाद उन्होंने जीवन के वास्तव रूप को देखा । समाज में विषमता थी । अन्याय-अत्याचार, शोषण और असन्तोष था । तब उन्होंने इनके विरोध में आवाज उठाई; मानवता का पक्ष लिया, शोषितों की वकालत की । 'अंचल' जी छायावाद से प्रगतिवाद के दौर में आए । देश-प्रेम, राष्ट्रीयता, संस्कृति के गीत गाये । मनुष्य को सही तरह से जीना सिखाया ।

'अंचल' जी ने उपन्यास, कहानी और निबंध भी लिखे । उनकी प्रमुख रचनाओं में से 'अपराजिता', 'मधूलिका', 'लाल चूनर', 'किरण वेला', 'वर्षान्त के बादल', 'विराम चिह्न' आदि रचनाएँ लोक प्रिय हुईं ।

यह कविता :

प्रस्तुत कविता कवि की एक प्रगतिशील रचना है । कवि का आग्रह है कि आदमी स्वार्थी नहीं, परोपकारी बने । वह दु:ख नहीं, सुख दे । सुख न दे सके तो कम-से-कम किसी को कष्ट न पहुँचाये । इसलिए कवि कहता है कि यदि तुम किसी के रास्ते पर फूल नहीं बो सकते तो कम-से-कम काँटें तो मत बोओ । अपने मन को अपने सुख-दु:ख के चक्कर में डालकर छोटा न करो । दूसरों को स्नेह, प्रेम और ममता की शीतल छाया में रखो । ईर्ष्या की कटुता समाप्त करो । क्योंकि शान्ति-सौहार्द के सुखद स्पर्श से जीवन की ज्वालाएँ बुझ जाती हैं । अपने व्यक्तिगत दु:ख तथा क्रोध से परिवेश को दु:खी मत करो । शान्ति

फैलाओ । संकट के समय अगर मुस्करा न सको तो व्याकुल भी मत होओ । आशा के सपने देखो । पर जलो मत । शान्ति से उसे पाने की चेष्टा करो । जो व्यक्ति दु:ख में भी जी सका, वही सच्चा चेतन प्राणी है । क्योंकि जीवन सुख और दु:ख दोनों से बना है । कवि ने ठीक ही कहा है कि 'सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका, वह है चेतन' । जीवन को जागकर भोगो । सो कर उदासीन न हो जाओ । संकट से मुँह मोड़ना, संघर्ष न करना कायरता है । तुम दूसरों का हौंसला बढ़ाओ । धीरज बँधाओ । जैसे बादलों की गड़गड़ाहट के बीच पवन का जयघोष बन्द नहीं होता, वैसे संकट चाहे कितना गहरा हो; अपना विश्वास, धैर्य, साहस नहीं खोना चाहिए । नहीं तो आदमी जिन्दा लाश हो जाएगा ।

काँटे कम-से-कम मत बोओ

यदि फूल नहीं बो सकते तो
काँटे कम से कम मत बोओ !

(1)

है अगम चेतना की घाटी, कमजोर बड़ा मानव का मन;
ममता की शीतल छाया में होता कटुता का स्वयं शमन !
ज्वालाएँ जब धुल जाती हैं, खुल-खुल जाते हैं मुँदे नयन ।
होकर निर्मलता में प्रशान्त बहता प्राणों का क्षुब्ध पवन ।

संकट में यदि मुस्का न सको, भय से कातर हो मत रोओ !
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम से कम मत बोओ !

(2)

हर सपने पर विश्वास करो, लो लगा चाँदनी का चन्दन,
मत याद करो, मत सोचो–ज्वाला में कैसे बीता जीवन,
इस दुनिया की है रीति यही –सहता है तन, बहता है मन,
सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका, वह है चेतन !
इसमें तुम जाग नहीं सकते, तो सेज बिछाकर मत सोओ !
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम से कम मत बोओ !

(3)

पग-पग पर शोर मचाने से मन में संकल्प नहीं जमता,
अनसुना अचीह्ना करने से संकट का वेग नहीं कमता,
संशय के सूक्ष्म कुहासे में विश्वास नहीं क्षण भर रमता,
बादल के घेरों में भी तो जय घोष न मारुत का थमता ।
यदि बढ़ न सको विश्वासों पर साँसों के मुरदे मत ढोओ !
यदि फूल नहीं बो सकते तो, काँटे कम से कम मत बोओ !

शब्दार्थ :

अगम – अथाह, दुर्गम, जहाँ कोई न जा सके । चेतना – चैतन्य, ज्ञान, बुद्धि, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति । घाटी – पर्वतों के बीच का संकरा मार्ग । कटुता – कड़वापन । शमन – दमन, शान्ति । ज्वालाएँ – अग्निशिखा, लपट । क्षुब्ध – व्याकुल, कुपित । कातर – अधीर, व्याकुल । मदिरा – शराब, नशा । कुहासा – कुहरा, कुहेलिका । मारुत – वायु, हवा । जयघोष – जयजयकार । साँसों के मुरदे – जिन्दा लाश ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) मानव का जीवन प्रशान्त कैसे हो सकता है ?

(ख) दुनिया की रीति कौन-सी है ?

(ग) मनुष्य को किसके बारे में सोचना नहीं चाहिए ?

(घ) साँसों के मुरदे न होने का आग्रह कवि ने क्यों किया है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :

(क) यदि फूल नहीं बो सकते तो क्या करना चाहिए ?

(ख) कौन-सी घाटी अगम होती है ?

(ग) किसको कमजोर कहा गया है ?

(घ) संकट में अगर मुस्करा न सको तो क्या करना चाहिए ?

(ङ) चेतन किसे कहा गया है ?

(च) तुम अगर जाग नहीं सकते तो क्या करना चाहिए ?

(छ) क्या करने से संकट का वेग कम नहीं होता ?

(ज) संशय के सूक्ष्म कुहासे में क्या नहीं होता ?

(झ) किसमें भी पवन का जयघोष नहीं थमता ?

(ञ) अगर विश्वासों पर न बढ़ सको तो कम-से-कम क्या नहीं ढोना चाहिए ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक शब्द में दीजिए :

(क) प्रस्तुत कविता का कवि कौन है ?

(ख) कम-से-कम क्या नहीं बोना चाहिए ?

(ग) चेतना की घाटी का स्वरूप कैसा है ?

(घ) मानव के मन को क्या माना गया है ?

(ङ) किसकी शीतल छाया में कटुता का शमन हो सकता है ?

(च) किसके धुल जाने से मुँदे नयन खुल जाते हैं ?

(छ) किस पर विश्वास करना चाहिए ?

(ज) सुख की कौन-सी मदिरा में जागने वाले को चेतन कहा गया है ?

(झ) संशय का कुहासा कैसा होता है ?

(ञ) किसके मुर्दे ढोने के लिए मना किया गया है ?

4. निम्नलिखित अवतरणों के अर्थ स्पष्ट कीजिए :

(क) यदि फूल नहीं बो सकते तो

कँटे कम-से-कम मत बोओ ।

(ख) ज्वालाएँ जब धुल जाती हैं

खुल-खुल जाते हैं मुँदे नयन ।

(ग) है अगम चेतना की घाटी ।

(घ) सुख की अभिमानी मदिरा में जो जाग सका,

वह है चेतन ।

(ङ) यदि बढ़ न सको विश्वासों पर

साँसों के मुरदे मत ढोओ ।

5. रिक्त स्थानों की पूर्त्ति कीजिए :

(क) है अगम ——— की घाटी,

कमजोर बड़ा मानव का ——— ।

(ख) होकर निर्मलता में ——— ।

बहता प्राणों का ——— पवन ।

(ग) हर ——— पर विश्वास करो,

लो लगा चाँदनी का ——— ।

(घ) ——— की अभिमानी मदिरा में

जो ——— सका, वह है चेतन ।

(ङ) संशय के सूक्ष्म ——— में

——— नहीं क्षण भर रमता ।

6. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दिये गये विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(क) किसके घेरों में मारुत का जयघोष नही थमता ?

(i) शत्रुओं के (ii) मनुष्यों के (iii) बादलों के (iv) बिजली के

(ख) किसमें बीते हुए जीवन को याद नहीं करना चाहिए ?

(i) ज्वालाओं में (ii) दु:ख में (iii) सुख में (iv) विपत्ति में

(ग) मानव के मन को कहा गया है —

(i) चंचल (ii) कमजोर (iii) चेतन (iv) सजग

(घ) सुख की अभिमानी मदिरा में जीनेवाले को कहा गया है –

(i) शराबी (ii) सुखी (iii) घमण्डी (iv) चेतन

(ङ) किसकी शीतल छाया में कटुता का शमन होता है ?

(i) ममता की (ii) पेड़ की (iii) प्रेम की (iv) घर की

भाषा-ज्ञान

1. प्रस्तुत पाठ में प्रयुक्त तुकवाले शब्द लिखिए :

उदाहरण : नयन – पवन । ममता – कटुता ।

(तुक = शब्दों के अंत के समान अंश, जैसे – 'न' और 'ता' ।'

2. प्रस्तुत कविता में बहुत सारे विशेषण शब्दों का प्रयोग हुआ है ।

जैसे – अगम, कमजोर, शीतल आदि ।

इस तरह दूसरे विशेषण-शब्दों को छाँटिए ।

3. प्रस्तुत पाठ में 'प्रशान्त' शब्द आया है ।

इस शब्द के पहले लगा हुआ अंश 'प्र' एक उपसर्ग है । यह अधिकता का सूचक है ।

जो शब्दांश किसी मूल शब्द के पहले लगकर उसके अर्थ या भाव को बदल देते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं ।

इस तरह के उपसर्ग-प्रयुक्त शब्दों की सूची तैयार कीजिए ।

■■■